डॉ॰ सुजाता गुप्ता
अतिथि शिक्षक, हिंदी विभाग
जगदीश नन्दन महाविद्यालय
मधुबनी - 847211

[स्नातक प्रथम वर्ष के लिए सहयोगी पाठ्य सामग्री]

प्र० छायावादी काव्य की प्रवृत्तियाँ

उ०- छायावाद का विकास द्विवेदी-युग के बाद हुआ। छायावाद की काव्य-सीमा मुख्यतः 1918 ई० से 1936 ई० तक मानी गयी है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने भी इसका प्रारंभ 1918 से माना है, क्योंकि छायावाद के प्रमुख कवि प्रसाद, निराला और पंत ने भी इसी वर्ष के आसपास रचनाओं को लिखना प्रारंभ किया था। 1916 ई० में निराला की 'जूही की कली' प्रकाशित हुई और प्रसाद की 'झरना' 1918 ई० में। पन्त जी की भी रचनाएँ 1918 ई० में प्रकाशित ('पल्लव' की रचनाएँ) हुई। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर इसका, छायावाद का प्रारंभ 1918 ई० से माना गया है। 1935 ई० में प्रसाद जी की 'कामायनी' प्रकाशित हुई और पन्त जी का 'लोकायतन', तब तक निराला की रचनाओं में भी प्रगतिवाद का प्रभाव ('कुकुरमुत्ता', 'वह तोड़ती पत्थर') स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था। 1936 ई० में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना के साथ छायावाद की अंतिम सीमा भी परिलक्षित हो चुकी थी।

छायावादी काव्य का जन्म द्विवेदी युगीन काव्य की प्रतिक्रियास्वरूप हुआ था। द्विवेदी युग की कविता विषयनिष्ठ, वर्णनात्मक एवं स्थूल थी, जबकि छायावादी कविता व्यक्तिनिष्ठ, कल्पनाप्रधान और सूक्ष्म है। प्रारंभ में, 'छायावाद' का प्रयोग व्यंग्य रूप में उन कविताओं के लिए किया गया, जो अस्पष्ट थी, जिनकी 'छाया' (अर्थ) कहीं और पड़ती थी, किन्तु बाद में यह नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया, जिनमें मानव और प्रकृति के सूक्ष्म सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भान होता

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

था और वेदना की रहस्यमयी अनुभूति की लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में अभिव्यंजना की जाती थी।

छायावाद की प्रमुख परिभाषाएं

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल :

"छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ उसका संबंध काव्यवस्तु से होता है, अर्थात् जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। .... छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है।"

2. जयशंकर प्रसाद :

"जब वेदना के आधार पर स्वानुभूति होने लगी तब हिंदी में उसे 'छायावाद' के नाम से अभिहित किया गया। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय, प्रतीक विधान तथा उपचार वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृत्ति छायावाद की विशेषताएं हैं।"

3. डॉ० नगेन्द्र :

"छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। छायावाद एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है, जीवन के प्रति एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है।"

4. डॉ० रामकुमार वर्मा :

"परमात्मा की छाया आत्मा में, आत्मा की छाया परमात्मा में पड़ने लगती है, तभी छायावाद की सृष्टि होती है।"

5. महादेवी वर्मा

"छायावाद तत्वत: प्रकृति के बीच जीवन का एक उद्गीथ है।..... उसका मूल दर्शन सर्वात्मवाद है।"

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

6. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी :

"छायावाद के मूल में पाश्चात्य रहस्यवादी भावना अवश्य थी। इस श्रेणी की मूल प्रेरणा अंग्रेजी की रोमांटिक भावधारा की कविता से प्राप्त हुई थी और इसमें सन्देह नहीं कि उक्त भावधारा की पृष्ठभूमि में सन्तों की रहस्यवादी साधना अवश्य थी।"

उक्त सभी परिभाषाओं पर आधारित लक्षणों के अनुसार इसकी (छायावाद) एक सर्वमान्य परिभाषा इस प्रकार हो सकती है :-

"प्रेम, प्रकृति और मानव सौन्दर्य की स्वानुभूतिमयी रहस्यपरक सूक्ष्म अभिव्यंजना लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में जिस काव्य में होती है, उसे छायावाद कहा जाता है।"

छायावादी काव्य की प्रवृत्तियाँ

छायावादी काव्य विषयवस्तु और शैली — इन दोनों ही रूपों में अपने पूर्ववर्ती काव्य से भिन्न रहा है। इसकी प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं :—

1) सौन्दर्य चेतना : छायावादी काव्य मूलत: प्रेम और सौंदर्य का काव्य है, जिसकी सौन्दर्य भावना सूक्ष्म और उदात्त है। बाह्य सुन्दरता की अपेक्षा आंतरिक सौन्दर्य के वर्णन एवं चित्रण में छायावादी कवियों ने महारथ हासिल की है। नेत्रों का सौन्दर्य और उसका प्रभाव की व्याख्या, जिसप्रकार प्रसादजी ने आकर्षक ढंग से की है —

कमल से जो चारु दो खंजनु प्रथम
पंख फड़काना नहीं थे जानते।
चपल चोखी चोट कर अब पंख की
विकल करते भ्रमर को आनन्द से। — प्रसाद

शारीरिक अंगों की सुन्दरता का वर्णन आकर्षक ढंग से

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रस्तुत करते काव्य 'कामायनी' में श्रद्धा के सौन्दर्य का वर्णन निम्न प्रकार से प्रकाशित हुआ है :-

नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ बन बीच गुलाबी रंग । —प्रसाद

छायावाद में आकर श्रृंगार की पुन:प्रतिष्ठा हुई । इन कवियों में संयोग और वियोग — दोनों श्रृंगार-रूपों का चित्रण हुआ । जहाँ प्रकृति के प्रतीकों को प्रेम-श्रृंगार के आकर्षित रूपों में दर्शाया गया । 'जूही की कली' नामक कविता में ऐसा ही कुछ प्रतीत हुआ है—

विजन-वन-वल्लरी पर
सोती थी सुहागभरी-स्नेह-स्वप्न-मग्न
अमल-कोमल-तनु-तरुणी-जूही की कली,
दृग बन्द किये, शिथिल-पत्रांक में ।

प्रेम-व्यापारों का चित्रण का अद्‌भुत सौंदर्य बड़ी ही सहजता के साथ मानवीय मनुहारों के द्वारा इंगित किया है । सौंदर्य और श्रृंगार — दोनों के साथ-साथ सहज अभिव्यक्ति छायावादी काव्य को विशिष्ट बनाते हैं :—

निर्दय उस नायक ने
निपट निठुराई की,
कि झोंकों की झाड़ियों से
सुन्दर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली,
मसल दिये गोरे कपोल गोल,
चौंक पड़ी युवती —
चकित चितवन निज चारों ओर फेर,
हेर प्यारे को सेज पास,
नम्रमुख हँसी, खिली
खेल रंग प्यारे संग । — निराला ('जूही की कली')

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

2) रहस्य भावना : छायावादी काव्य में रहस्यवाद की प्रवृत्ति दिखलाई देती है। मुकुटधर पाण्डेय इसे 'रहस्यवाद', तो नंद दुलारे वाजपेयी ने इसे "आध्यात्मिक छाया का भान" बतलाया है। यहाँ 'छाया' अपना वास्तविक अर्थ खोकर सूक्ष्म सांकेतिक रूप में प्रकट होती है। आचार्य शुक्ल ने भी इसी कारण 'छायावाद' का अर्थ 'रहस्यवाद' माना है। प्राय: सभी छायावादी कवियों ने अज्ञात सत्ता के प्रति जिज्ञासा को प्रकट किया है। प्रसाद जी की 'कामायनी' में उस अज्ञात सत्ता का चित्रण दिखलाई देता है। पता नहीं वह अज्ञात सत्ता कौन है, कैसी है और क्या है :

"हे अनन्त रमणीय कौन तुम,
यह मैं कैसे कह सकता।
कैसे हो, क्या हो, इसका तो
भार विचार ना सह सकता ॥ —प्रसाद

पन्त की कविता 'मौन-निमंत्रण' में भी इसी प्रकार की अभिव्यक्ति हुई है :—

"न जाने कौन अए द्युतिमन,
जान मुझको अबोध अज्ञान।
सुझाते हो तुम पथ अनजान,
फूंक देते छिद्रों में गान।

'महाप्राण' निराला की रचनाओं में भी यह रहस्यवाद देखा जा सकता है। एक उदाहरण इस प्रकार है :—

"दिये हैं मैंने जगत को फूल-फल
किया है अपनी प्रभा से चकित-चल,
पर अनश्वर था सफल पाल्लवित पल—
ठाठ जीवन का वही जो ढह गया है।"

— निराला

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

3.) राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति : छायावादी काव्य में राष्ट्रीयता के स्वर भी दिखलाई / मुखरित हुए हैं। छायावाद का उद्भव जिन परिस्थितियों में हुआ, उस समय राष्ट्रीय आंदोलन अपने चरम पर था। छायावादी कवियों ने भी राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति अपने काव्यसंसार में की। प्रेम पूर्ण जीवन के लिए स्वतंत्र परिस्थि-तियाँ चाहिए और, इसी कारण छायावादी काव्य की भूमिका एक व्यापक राष्ट्रीय चेतना को उजागर करने में अत्यंत ही महत्व-पूर्ण भूमिका अदा करती हैं। जयशंकर प्रसाद के काव्य और नाटकों की गीति योजना में राष्ट्रीय जागरण और भारतवर्ष का गुणगान दिखलाई देता है। जयशंकर प्रसाद की रचना है —

'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारती'

माखन लाल चतुर्वेदी के गीतों में राष्ट्रभक्ति की भावना अपने चरम उत्कर्ष पर है। 'पुष्प की अभिलाषा' में राष्ट्र के प्रति प्रेम का उद्‌गार बहुचर्चित है :—

"मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर तुम देना फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।"

वस्तुत: छायावाद मुक्ति का काव्य है, जिसमें प्रेम, धर्म और राष्ट्रीयता तीनों की मुक्ति का स्वर सम्मिलित है।

4.) दुख और वेदना की विवृत्ति : छायावादी कविता में वेदना की पर्याप्त अभिव्यक्ति हुई है। 'लहर' के एक गीत में 'प्रसाद' ने करुणा का अभिनन्दन करते हुए कहा है —

'जिसके कन- कन में स्पन्दन हो
मन में मलयानिल चन्दन हो
करुणा का नव-अभिनन्दन हो
वह जीवन- गीत सुना जा रे।'

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

महादेवी वर्मा तो वेदना की ही कवयित्री हैं। वे अपने वेदना विह्वल हृदय की तुलना 'मेघखण्ड' से करती हुई कहती हैं :

" मैं नीर भरी दुःख की बदली
विस्तृत नभ का कोना - कोना,
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली।

महादेवी के दुखवाद पर बौद्धदर्शन का भी प्रभाव देखा जा सकता है। प्रसाद के काव्य 'आंसू' में भी वेदना ही है :

"जो घनीभूत पीड़ा थी मस्तक में स्मृति-सी छाई।
दुर्दिन में आंसू बनकर वह आज बरसने आई।"

महादेवी ने तो 'पीड़ा' को इतना महत्त्व दिया है कि पीड़ा- विहीन प्रियतम भी उन्हें मान्य नहीं होगा :

"पीड़ा में ढूंढा तुमको
तुम में ढूंढूंगी पीड़ा।"

5.) ~~आत्माभिव्यंजना~~ नारी सम्मान की भावना : छायावादी कवियों ने नारी के प्रति उदात्त दृष्टिकोण अपना कर नारी को समाज एक सम्मानीय स्थान प्रदत्त किया है। रीतिकालीन कवियों की भोग विलासिता के विपरीत उसे प्रेरणा और गरिमा का स्त्रोत बताया। वह दया, क्षमा, करुणा, प्रेम की देवी है और अपने इन्हीं गुणों के कारण वह श्रद्धा की पात्र है :—

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।"
— प्रसाद

पन्त ने तो नारी को 'देवि', माँ, सहचरि, प्राण कहकर ही उसे ऊँचा स्थान दे दिया है। यह नारी के प्रति उनके आदर का परिचय है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

"तुम देवि ! आह कितनी उदार
वह मातृमूर्ति है निर्विकार
हे सर्वमंगले ! तुम महती
सबका दुख अपने पर सहती ।" —पन्त

निराला ने भी स्त्री को पुरुष के हृदय में आशा का संचार करने वाली शक्ति के रूप में प्रकाशित किया है। 'राम की शक्तिपूजा' में मात्र सीता के स्मरण से ही राम के भीतर नयी शक्ति एवं आशा का संचार दिखलाई देता है —

"ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत,
जागी पृथ्वी तनया कुमारिका छवि अच्युत।" — निराला

6.) <u>प्रकृति चित्रण</u>: छायावादी कविताओं में प्रकृति को आलंबन बना कर रचनाएँ की हैं। यह प्रकृति एक मनुष्य की भाँति ही विविध क्रियाओं में निपुण है, मानो मानवीय चेतना से परिपूर्ण हो। पन्त जी को तो 'प्रकृति के सुकुमार कवि' की उपमा ही दी गयी है।

"गिरि का गौरव गाकर झर-झर
मद में नस-नस उत्तेजित कर,
मोती की लड़ियों से सुन्दर,
झरते हैं झाग-भरे निर्झर।" — पन्त

इतना ही नहीं वे प्रकृति सौंदर्य को नारी-सौंदर्य से भी शीर्ष रखते हैं। वे स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं कि नारी सौंदर्य में आकर्षण होता है, पर इतना भी नहीं कि प्रकृति सौंदर्य की उपेक्षा कर सकें:

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले! तेरे बाल-जाल में कैसे उलझा दूं 'लोचन'
भूल अभी से इस जग को।"
— पन्त

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रसाद की रचना 'मेरे नाविक' का एक अंश द्रष्टव्य है :

"जहाँ साँझ-सी जीवन छाया,
ढीले अपनी कोमल काया,
नील नयन से ढुलकाती हो,
ताराओं की पांत घनी रे।"

इस प्रकार छायावादी काव्य में प्रकृति के विभिन्न रूप मिलते हैं। आलम्बन, उद्दीपन, रहस्य, दार्शनिकता, नारी-चित्रण, मानवीकरण — आदि विविध रूपों में छायावादी काव्य में प्रकृति चित्रण का रूप मिलता है।

7.) <u>शिल्पगत प्रवृत्तियाँ</u>: छायावादी काव्य विषयवस्तु एवं शिल्प दोनों ही दृष्टियों से प्रभावी एवं उत्कृष्ट रहा है। प्रतीकात्मक शैली, लाक्षणिक भाषा का प्रयोग, बिंबात्मकता, नवीन अलंकार विधान और मुक्तक छंद के कारण इस काव्य में शिल्पगत नवीनता दिखाई देती है।

"कहो, तुम रूपसि कौन?
व्योम से उतर रही चुपचाप,
छिपी निज छायाछवि में आप,
सुनहला फैला केश-कलाप,
मधुर, मंथर, मृदु, मौन।" — पन्त

एक अन्य उदाहरण द्रष्टव्य है :

"पूर्ण मनोरथ! आए-तुम आए; रथ का घर्घर नाद
तुम्हारे आने का संवाद! .... मौन कुटीर।

— निराला

'सरोज-स्मृति' का एक अंश

"मुझ भाग्यहीन की तू सम्बल,
युग वर्ष बाद जब हुई विकल.......
कर करता मैं तेरा तर्पण"

— निराला

"दीप मेरे जल अकम्पित,
घुल अचंचल।" — महादेवी

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

अतः छायावादी काव्य की एक सुदृढ़ वैचारिक पृष्ठभूमि है, जिसने हिन्दी काव्य को एक जीवन-सौंदर्य और, नया मानवीय दृष्टिकोण दिया। इसीलिए इसे हम आधुनिक काल का 'स्वर्ण युग' कह सकते हैं। डॉ० नगेन्द्र के अनुसार — "इस कविता का गौरव अक्षय है। इसकी समृद्धि की समता केवल भक्तिकाल ही कर सकता है।"

डॉ० सुजाता गुप्ता
अतिथि शिक्षक, हिंदी विभाग
जगदीश नन्दन महाविद्यालय
मधुबनी

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner